5. बिहारी

कवि परिचय

कविवर बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि हुए हैं। शृंगार रस की चमत्कारपूर्ण कविता करने वालों में ये अग्रगण्य हैं। इनका जन्म ग्वालियर के पास बसुआ गोविंदपुर में माथुर चतुर्वेदी परिवार में सन् 1595 में हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय था, जो प्रसिद्ध कवि केशवदास से भिन्न थे। बचपन में बिहारी को संस्कृत, प्राकृत, ज्योतिष आदि के अध्ययन का सुयोग मिला। बाद में वृंदावन आए और निंबार्क संप्रदाय में राधा–कृष्ण भक्ति की दीक्षा ली। इनकी काव्य–प्रतिभा से प्रसन्न होकर शाइजादा खुर्रम (जो बाद में शाहजहाँ के नाम से दिल्ली के बादशाह हुए) इन्हें दिल्ली ले आए। वहाँ शाही दरबार में प्रतिष्ठा मिली, जिसे कई हिंदू राजाओं ने भी इन्हें सम्मान दिया। आमेर के मिर्जा राजा जयसिंह ने इनकी वार्षिक वृत्ति बाँध दी। एक बार अपनी वृत्ति लेने जब आमेर पहुँचे तो वहाँ राजा जयसिंह, नवोढ़ा रानी के अनुराग में इस तरह आसक्त थे कि राजकाज ही भुला बैठे थे। सचेत करने के लिए बिहारी ने यह दोहा लिखकर राजा के पास भिजवाया –

''नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहिं काल।
अली, कली ही सों बिंध्यो आगैं कौन हवाल।।''

दोहा पढ़कर जयसिंह की आँखें खुल गईं। इस अन्योक्ति से वे बहुत प्रभावित हुए। प्रसन्न होकर बिहारी को पुरस्कार रूप में जागीर दी। फिर बिहारी आमेर में ही स्थायी रूप से रहने लगे। इन्होंने राजा के कहने पर सात सौ दोहे लिखे, जो 'सतसैया' के नाम से विख्यात है। इनका निधन सन् 1663 में हुआ।

काव्य परिचय

बिहारी की एक मात्र कृति 'सतसैया' प्रसिद्ध है। इसमें कुल 713 दोहे हैं। इस पर शताधिक टीकाएँ लिखी जा चुकी हैं। पूर्ण 'बिहारी रत्नाकर' नाम से प्रसिद्ध बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर की टीका उत्कृष्ट है। 'सतसैया' में भक्ति, नीति, हास्य–व्यंग्य, वीरता, राजप्रशस्ति, धर्म, सत्संग–महिमा एवं शृंगार का वर्णन दोहों में किया है। कुछ कवित्त भी उनके रचे बताए जाते हैं परंतु प्रामाणिक नहीं हैं। एक ही रचना (सतसैया) से बिहारी को इतनी ख्याति मिली, यह उनकी काव्यगत उत्कृष्टता का ज्वलंत प्रमाण है।

भाव पक्ष

बिहारी मूलतः शृंगारी कवि थे। नायिकाओं के रूप–सौंदर्य, पूर्वानुराग, मान, प्रवास आदि के चमत्कारपूर्ण चित्र उनके काव्य में मिलते हैं। लज्जा, मद, अवहित्था, हर्ष, विबोध आदि संचारी भावों और नायक–नायिका की चेष्टाओं या अनुभावों का जैसा वर्णन सतसई में मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। संयोग शृंगार में कवि का मन विशेष रूप से रमता था। फारसी पद्धति अपनाने के कारण नायिकाओं के विरह वर्णन अस्वाभाविक हो उठे हैं।

भक्तिपरक दोहों में वर्णित भक्तिभाव में भक्त कवियों जैसा ईश्वर–प्रेम और अनन्यभाव दिखाई पड़ता है।

कला पक्ष

बिहारी उच्चकोटि के काव्य शिल्पी थे। दोहा जैसे छोटे छंद में चुन–चुनकर व्यंजक शब्दों का प्रयोग करके कवि ने अर्थगांभीर्य कौशल दिखाया है। समास पद्धति अपनाकर भाषा की समाहार शक्ति से काम लिया है। इसीलिए कहा जाता है कि बिहारी ने 'गागर में सागर' भर दिया है। उनकी ब्रजभाषा इतनी सशक्त और शुद्ध है कि आलोचकों ने उसे मध्यकाल की मानक काव्यभाषा के रूप में स्वीकार किया है। अलंकारों का समुचित प्रयोग, प्रसंगानुकूल मधुर व्यंजक पदावली, सांकेतिक अभिव्यंजना शैली ऐसी विशेषताएँ हैं जो बिहारी को रीतिकाल में सर्वोपरि स्थान प्रदान करती है। उनकी भाषा में चित्रोपमता, नाद-सौंदर्य, लोकोक्ति एवं मुहावरों का प्रयोग सहजता से हुआ है।

पाठ–परिचय

इस पाठ में बिहारी के भक्ति, शृंगार, नीति और प्रकृति संबंधी दोहों का संकलन किया गया है। भक्ति संबंधी दोहों में कवि ने चुनौतीपूर्ण भाषा में भगवान से अपने उद्धार की याचना की है तो कहीं नागरी राधा से भव–बाधा दूर करने की याचना की है। शृंगार संबंधी दोहों में नारी–सौंदर्य का वर्णन किया है। सतसई में शृंगार के दोनों पक्षों का सुंदर चित्रण है। वियोग के दोहों में अतिशयोक्ति भी है। नीति के दोहों में कवि ने जीवन के यथार्थ रूप का वर्णन करते हुए आदर्श की बात कही है। ससुराल में रहने से जँवाई का मान घटता है। विनम्रता से ही व्यक्ति समाज में सम्मान पाता है। प्रकृति संबंधी दोहों में विभिन्न ऋतुओं का वर्णन किया है। भावों की अभिव्यक्ति अनूठी है। अलंकारों के प्रयोग से अभिव्यक्ति में अधिक सौंदर्य आ गया है।

•••

दोहे

मेरी भव–बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँईं परैं, स्यामु हरित–दुति होइ।।1।।
करौ कुवत जगु कुटिलता तजौं न दीनदयाल।
दुखी हो हुगे सरल हिय बसत त्रिभंगी लाल।।2।।
मोहूँ दीजै मोषु, ज्यों अनेक अघमनु दियौ।
जौ बाँधै ही तोषु, तौ बाँधौ अपनैं गुननु।।3।।
पतवारी माला पकरि और न कछु उपाउ।
तरि संसार–पयोधि कौं, हरि–नावैं करि नाउ।।4।।
तौ, बलियै, भलियै बनी, नागर नंद किसोर।
जौ तुम नीकैं कै लख्यौ मो करनी की ओर।।5।।
अब तजि नाउँ उपाव कौ, आए पावस-मास।
खेलु न रहिबौ खेम सौं केम–कुसुम की वास।।6।।
आवत जात न जानियतु, तेजहिं तजि सियरानु।
घरहँ जँवाई लौं घट्यौ खरौ पूस–दिन मानु।।7।।

सुनत पथिक–मुँह, माह–निसि चलति लुवैं उहिं गाँम।
बिनु बूझैं, बिनु हीं कहैं, जियति बिचारी बाम।।8।।
नहिं पावसु, ऋतुराज यह, तजि तरवर चित–भूल।
अपतु भऐं बिनु पाइहै क्यौं नव दल, फल, फूल।।9।।
रुक्यौ साँकरैं कुंज–मग, करतु झाँझि झकुरातु।
मंद मंद मारुत–तुरँगु खूँदतु आवतु जातु।।10।।
तंत्री–नाद, कवित्त–रस, सरस–राग, रति–रंग।
अनबूड़े–बूड़े, तरे जे बूड़े सब अंग।।11।।
कनक कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ।
उहिं खाऐं बौराइ जगु, इहिं पाएँ बौराइ।।12।।
नहिं परागु, नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल।
अली, कली ही सौं बिंध्यौ, आगैं कौन हवाल।।13।।
नीच हियैं हुलसे रहैं गहे गेंद के पोत।
ज्यौं ज्यौं माथैं मारियत, त्यौं त्यौं ऊँचे होत।।14।।
स्वारथु, सुकृत न श्रमु वृथा, देखि, बिहंग, बिचारि।
बाज, पराएँ पानि परि तूँ पच्छीनु न मारि।।15।।
लाज–लगाम न मानहीं, नैना मो बस नाहिं।
ए मुँहजोर तुरंग ज्यौं, ऐंचत हूँ चलि जाहिं।।16।।
जोग–जुगति सिखए सबै, मनौ महामुनि मैन।
चाहत पिय–अद्वैतता कानन सेवत नैन।।17।।
कौन सुनै, कासौं कहौं, सुरति विसारी नाह।
बदाबदी ज्यौ लेत हैं, ए बदरा बदराह।।18।।
कुटिल अलक छुटि परतमुख बढ़िगौ इतौ उदोतु।
बंक बकारी देत ज्यौं दामु रुपैया होतु।।19।।
रह्यौ ऐचि अंतु न लहै अवधि–दुसासनु बीरु।
आली, बाढ़तु विरह ज्यौं पांचाली कौ चीरु।।20।।
दुसह दुराज प्रजानु कौं क्यौं न बढ़ै दुख–दंदु।
अधिक अँधेरौ जग करत मिलि मावस रवि–चंदु।।21।।
तिय कित कमनैती, पढ़ी बिनु जिहि भौंह कमान।
चलचित–बेझैं चुकति नहिं बंकबिलोकनि–बान।।22।।
आड़े दै आले बसन जाड़े हूँ की राति।
साहसु ककै सनेह–बस सखी सबै ढिंग जाति।।23।।
कौड़ा आँसू–बूँद, कसि साँकर बरुनी सजल।
कीने बदन निमूँद, दृग–मलिंग डारे रहत।।24।।

शब्दार्थ

भव–बाधा–सांसारिक कष्ट / झाँई–(इसके तीन अर्थ हैं) परछाई, झलक, ध्यान / हरित–(इसके भी तीन अर्थ हैं) हरा रंग, हराभरा अर्थात् प्रसन्न, हर लेना या तेजहीन / कुवत–कुबात / मोषु–मुक्ति / गुननु–गुणों से, रस्सी से / पतवारी–पतवार, प्रतिज्ञा / नावै–नाम / बलियै–बलिहारी / खेम–क्षेम / कैम–कदंब / तेजहिं–प्रकाश / दिनभानु–सूर्य, दिन का मान / अपतु–अपत्र, अमर्याद / साँकरै–संकीर्ण / झकुरातु–झुकना / विकास–विकसित, खिलना / हुलसै रहैं–उल्लसित होता रहता / गेंद के पोत–गेंद की वृत्ति / मुँहजोर–शक्तिशाली मुख वाले, अधिक बोलने वाले / जोग–योग, संयोग / अद्वैतता– जीवन और ब्रह्म की एकता, सब काल के लिए एक हो जाना / कानन सेवत–कानों तक आयत, वन में तपस्या करने वाला / बदराह–कुमार्ग गामी / बकारी–रुपये का अंकन करने का चिह्न / दाम–दमड़ी / पांचाली–द्रौपदी / कमनैती–धनुर्विद्या / कौड़ा–कौड़ी / मलिंग–फकीर।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'मेरी भव–बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँईं परैं, श्यामु हरित–दुति होइ।।'
उपर्युक्त दोहे के किस शब्द में श्लेष अलंकार है ?
(क) नागरि सोइ (ख) भव–बाधा
(ग) तन (घ) हरित–दुति ( )

2. 'पौष मास में दिनमान प्रभावहीन हो जाता है', इस भाव को स्पष्ट करने के लिए किससे उपमा दी है ?
(क) अतिथि से (ख) जँवाई से
(ग) छोटे दिन से (घ) सूर्य की तेजी से ( )
उत्तरमाला– (1) घ (2) ख

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. 'त्रिभंगीलाल' शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है ?
2. जनता का दुःख किस समय अधिक बढ़ जाता है ?
3. नायिका बादलों के किस व्यवहार से दुखी है ?
4. 'बाज, पराएँ पानि परि' कथन किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?
5. 'कनक कनक तै सौ गुनी' में कौनसा अलंकार है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. तौ, बलियै, भलियै बनी, नागर नंद किसोर।
जौ तुम नीकैं कै लख्यौ मो करनी की ओर।।
उपर्युक्त दोहे में निहित कवि के मूलभाव को स्पश्ट कीजिए।
2. नायक ने नायिका की कमनैती की क्या विलक्षणता बताई है ?
3. कवि ने नीच व्यक्ति के स्वभाव की क्या विशेषता बताई है ?

4. 'अनबूड़े बूड़े, तरे जे बूड़े, सब अंग' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

निबंधात्मक प्रश्न

1. 'बिहारी अपनी बात कहते किसी से है और उसका प्रभाव किसी और पर पड़ता है।' उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए।
2. 'बिहारी के दोहों में भावों की सघनता है' सप्रमाण स्पष्ट कीजिए।
3. बिहारी की वाक्पटुता सराहनीय है, उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
4. निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर बिहारी के काव्य की विशेषता बताइए –
   (क) अलंकार योजना (ख) प्रकृति वर्णन
   (ग) उक्ति वैचित्र्य (घ) भाषा
5. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   (क) कौड़ा आँसू.....डारे रहत।
   (ख) जोग–जुगति .....सेवत नैन।
   (ग) अब तजि नाउ .....कुसुम की वास।
   (घ) नीच हियै .....ऊँचे होत।

•••

यह भी जानें –

(क) संयुक्त 'र' के प्रचलित तीनों रूप यथावत् रहेंगे। जैसे – प्रकार, धर्म, राष्ट्र

(ख) 'श्र' का प्रचलित रूप ही मान्य होगा। इसे 'श्र' के रूप में नहीं लिखा जाएगा।

(ग) त्+र के संयुक्त रूप के लिए त्र का ही प्रयोग किया जाएगा 'त्र' का नहीं।

•••